Programme Project Report (PPR)

पाठ्यक्रम परियोजना प्रतिवेदन

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा (DPJ)

1. (Programme's mission & objectives) कार्यक्रम के लक्ष्य और उद्देश्य –

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से उच्च शिक्षा को उन दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचाना है, जहाँ परम्परागत संस्थागत शिक्षा व्यवस्था का प्राय: अभाव है। इसका उद्देश्य उन लोगों को शिक्षा से जोड़ना है जो किसी कारणवश उच्च शिक्षा से वंचित है या बीच में शिक्षा छोड़ चुके हैं। विशेषत: ज्योतिष के माध्यम से प्राच्य विद्याओं का संवर्द्धन भी प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। फलित ज्योतिष में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के निम्नलिखित लक्ष्य और उद्देश्य हैं :-

- शिक्षार्थियों को ज्योतिष विषय की आधारभूत सिद्धान्तों से परिचय कराना।
- भारतीय मूल विद्याओं के प्रति छात्रों में जागरूकता पैदा करना तथा उन्हें शास्त्रीय ज्ञान देना।
- प्राच्य विद्याओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- उत्तराखण्ड प्रदेश (देवभूमि) में शास्त्रीय रक्षार्थ उनमें निहित ज्ञान को विद्यार्थियों तक पहुँचाना।

2. (Relevance of the program with HEI,s Mission and Goals) कार्यक्रम की प्रासंगिकता/उपयोगिता –

आज के समय में शिक्षार्थी ज्ञान प्राप्त करना चाहता है चाहे उसका माध्यम कुछ भी हो। इस परिदृश्य में दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण प्रणाली लगभग प्रत्येक क्षेत्र में अत्यधिक उपयोगी साबित हो रही है। दूरस्थ शिक्षण प्रणाली की प्रमुख विशेषता यह है कि यह समयबद्ध व स्थानबद्ध नहीं है। ज्योतिष विषय एक पारम्परिक विषय है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता इस सन्दर्भ में भी ही निहित है कि यह विषय दूरस्थ प्रणाली के मध्य मानवीय मूल्य, गरिमा को प्रस्थापित कर सके। इस दृष्टि से यह विषय उच्च ज्ञान के साथ संवेदना-कौशल के विकास में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है। ऐसे में परम्परागत विश्वविद्यालय के घटकों से इतर दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण प्रणाली के ज्योतिष विषय के विद्यार्थियों को पारम्परिक ग्रन्थों के साथ-साथ सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरणों (जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, यू-ट्यूब, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि) एवं संचार माध्यमों से भी ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान को उपलब्ध कराया जाता है।

3. (Nature of prospective target group of learners) शिक्षार्थियों के समूह की प्रकृति

बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण कोई भी शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकता है। ज्योतिष विषय का यह पाठ्यक्रम उन छात्रों को केन्द्र में रखकर विकसित किया गया है जो ज्योतिष के क्षेत्र में रूचि रखते हो, और प्राच्य विद्याओं में जिनकी निष्ठा हो। जो शिक्षार्थी शिक्षक, शास्त्रज्ञ, परम्परागत विद्वान, के रूप में तथा अन्य सम्बन्धित क्षेत्र में अपने को स्थापित करना चाहते हैं किन्तु सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं अन्य कारणों से ज्योतिष शास्त्र की शिक्षा से वंचित हैं या बीच में ही अपनी शिक्षा छोड़ चुके हैं, ऐसे लोग भी इस पाठ्यकम का लाभ ले सकते है। ज्योतिष विषय के शिक्षार्थी इस पाठ्यक्रम से सम्बन्धित स्वअध्ययन पाठ्यसामग्री, दृश्य एवं श्रृव्य व्याख्यान, परामर्श सत्रों, कार्यशालाओं, सूचना प्रौद्योगिकी के

उपकरणों(जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट आदि) एवं संचार के माध्यम से बिना किसी बन्धन के कहीं भी कभी भी ज्ञान अर्जित कर सकता हैं।

4. (Appropriateness of Programme to be conducted in open and distance learning mode to acquire specific skills and competence) दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में विशिष्ट कौशल व योग्यतावर्धन में पाठ्यक्रम की उपयुक्तता –

- कम्प्यूटर, इन्टरनेट, मोबाईल, स्काईप, वेबसाइट संचार आदि माध्यमों की सहायता से विषय को शिक्षार्थी तक पहुँचाना।
- समय-समय पर विषय विशेषज्ञों की राय से पाठ्यक्रम में नवीनता स्थापित करना।
- सक्षम लेखकों द्वारा अध्ययन सामग्री को अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करके नवीन पद्धति से शिक्षार्थी को अधिगम कराना।
- सामग्री में ही छात्र और शिक्षक के बीच व्यावहारिक संवादों की उपस्थिति से विषय बोध कराना।

5. (Instructional Design) निर्देशात्मक रूपरेखा – ज्योतिष विषय का इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत ज्योतिष के विभिन्न अंगों एवं उपांगों के अध्ययन को सम्मिलित किया गया है।

क्रम.	प्रश्नपत्र	श्रेयांक	अंक	न्यूनतम समयावधि	अधिकतम समयावधि	माध्यम
प्रथम वर्ष फलित ज्योतिष में डिप्लोमा DPJ						
1.	खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरम्भिक गणित PJ 101	06	100	01 वर्ष	03 वर्ष	लिखित पाठ्यसामग्री, ऑडियो-वीडियो व्याख्यान, ऑनलाइन पाठ्यसामग्री
2.	फलित ज्योतिष का आधारभूत सिद्धान्त PJ 102	06	100	01 वर्ष	03 वर्ष	"
3.	विवाह एवं मेलापक विचार DPJ 103	08	100	01 वर्ष	03 वर्ष	"
4.	मुहूर्त्त विचार DPJ 104	08	100	01 वर्ष	03 वर्ष	"

6. (Procedure for admissions, curriculum transaction and Evaluation) प्रवेश, पाठ्यक्रम वितरण एवं मूल्यांकन विधि –

प्रवेश ग्रीष्मकालीन एवं शीतकालीन दो सत्रों में होता है।

क. प्रवेश योग्यता - 10+2 उत्तीर्ण

पाठ्यक्रम अवधि - 1 वर्ष से 3 वर्ष

पाठ्यक्रम माध्यम - हिन्दी

पाठ्यक्रम श्रेयांक - 28

शुल्क संरचना -

वर्ष	प्रवेश शुल्क	परीक्षा शुल्क	डिग्री + Student welfare & Identity Card	कुल
I वर्ष	3000	600	450	4050

ख. वितरण – ज्योतिष विषय का पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित केवल उन्हीं अध्ययन केन्द्रों में संचालित किया जाएगा, जहाँ पर ज्योतिष विषय के शिक्षक उपलब्ध हों। विषय के सैद्धान्तिक पक्ष हेतु शिक्षार्थियों को स्वअध्ययन पाठ्यसामग्री मुद्रित रूप में दी जाएगी। दृश्य एवं श्रव्य व्याख्यान भी उपलब्ध कराएं जाऐंगे, जिनकी सहायता से शिक्षार्थी विषय को सूक्ष्मता एवं गहनता से समझ सकने में सक्षम हो। इसके साथ-साथ शिक्षार्थियों को सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न उपकरणों एवं माध्यमों से भी विषय को समझाने का प्रयास किया जाएगा। शिक्षार्थियों की समस्याओं के निराकरण हेतु परामर्श सत्रों का आयोजन किया जाएगा एवं प्रत्येक वर्ष कार्यशालाएं भी आयोजित की जाएंगी।

ग. मूल्यांकन – सत्रीय कार्यों के साथ- साथ मुख्य परीक्षा की उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन सक्षम परीक्षकों द्वारा ही कराया जाता है, जो विश्वविद्यालय स्तर की प्रणाली में मान्य है।

7. (Requirement of the laboratory support and library Resources) पुस्तकालय सहायता – स्वनिर्मित अध्ययन सामग्री के अतिरिक्त छात्रों के विशिष्ट ज्ञानार्जन हेतु सन्दर्भ पुस्तकों की व्यवस्था विश्वविद्यालय स्तर पर की जाती है। इसके अतिरिक्त जिन केन्द्रों में ज्योतिष से सम्बन्धित प्रवेश होते हैं, वहाँ भी छात्रों के सहायतार्थ पुस्तकालय की व्यवस्था होती है।

8. (Cost estimate of the programme and the provisions) पाठ्यक्रम की अनुमानित लागत –

अ) इकाई लेखन - 58×5000 = रू0 2,90000/-

ब) इकाई संपादन - 58×2500 = रू0 1,45,000/-

स) कुल - रू0 4,35000 /-

9. (Quality assurance mechanism and expected programme outcomes) गुणवत्ता प्रणाली एवं परिणाम

ज्योतिष विषय के इस पाठ्यक्रम के भविष्यगामी परिणाम निम्नलिखित होंगे :-

- शिक्षार्थी ज्योतिष विषय के आधारभूत तथ्यों से अवगत हो सकेंगे।
- भारतीय मूल के प्राच्य विद्याओं में छात्रों की अभिरूचि बढ़ेगी, साथ ही उनमें उनका उत्तरोत्तर विकास भी हो सकेगा।
- ज्योतिष विषय में अभिरूचि रखने वाले छात्रों का विकास हो सकेगा।
- ज्योतिष के क्षेत्र में अपने ज्ञान को आगे बढ़ा पाने में समर्थ हो सकेंगे।

स्व – अध्ययन सामग्री के परिवर्द्धन - संवर्धन हेतु समय-समय पर विषय वस्तु की समीक्षा की जायेगी तथा विषय को अधुनातन रूप में परखा जाएगा। इच्छुक विद्यार्थियों के लिए पाठयक्रम का निरन्तर प्रसार-प्रचार किया जाएगा।

पाठ्यक्रम : फलित ज्योतिष में डिप्लोमा

फलित ज्योतिष में डिप्लोमा : पाठ्यक्रम

PJ- 101 : प्रथम प्रश्न पत्र: खगोलीय परिचय एवं फलित ज्योतिष हेतु आरम्भिक गणित

खण्ड - I खगोल एवं काल परिचय

इकाई – I काल गणना

कुल सचिव

इकाई – 2 खगोल शास्त्र एवं समय रूपान्तरण

इकाई – 3 भचक्र में राशि व नक्षत्रों का विचार

इकाई – 4 पंचांग परिचय

खण्ड - 2 जन्म कुण्डली निर्माण विधि

इकाई – 5 लग्न एवं द्वादश भाव स्पष्ट साधन

इकाई – 6 ग्रह स्पष्ट साधन

इकाई – 7 विंशोत्तरी दशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर दशा साधन

इकाई – 8 योगिनी दशा व अन्तर्दशा साधन

खण्ड - 3 षोडश वर्ग साधन

इकाई – 9 द्रेष्काण, चतुर्थांश, सप्तमांश एवं नवमांश साधन

इकाई – 10 दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, विंशाश एवं खवेदांश साधन

इकाई – 11 अक्षवेदांश, चतुर्विंशांश, सप्तविंशाश, त्रिशांश, षष्टयंश साधन

द्वितीय पत्र - पी0जे0 – 102 फलित ज्योतिष के आधारभूत सिद्धान्त

खण्ड - 1 ज्योतिष: अर्थ, प्रवर्त्तक एवं राशि परिचय

इकाई – 1 ज्योतिष शास्त्र की व्युत्पत्ति एवं परिभाषायें

इकाई – 2 ज्योतिष शास्त्र के प्रवर्तक

इकाई – 3 राशि एवं उनके गुण धर्म

खण्ड - 2 ग्रह परिचय एवं उनकी अवस्थाएँ

इकाई – 4 ग्रहों के गुण धर्म

इकाई – 5 ग्रह परिचय एवं मैत्री सम्बन्ध

इकाई – 6 ग्रहों की बालादि अवस्थाएँ एवं उनकी दृष्टियाँ

खण्ड - 3 भाव व राशिस्थ भावेश एवं ग्रह फल

इकाई 7 तन्वादि द्वादश भाव कारकत्व

इकाई 8 द्वादश भावेशों व सूर्यादि ग्रहों का लग्नादि भाव में फल

इकाई 9 द्वादश राशियों में सूर्यादि ग्रह फल एवं राजयोग

खण्ड - 4 योग एवं दशा फल विचार

इकाई 10 पंच महापुरूष एवं विविध महत्वपूर्ण योग

इकाई 11 सूर्य तथा चन्द्रमा से बनने वाले योग

इकाई 12 अरिष्ट योग व अरिष्ट भंग योग

इकाई 13 विंशोत्तरी महादशा व अन्तर्दशा नाथ का विवेचन

इकाई 14 पंचांग फल

तृतीय पत्र - डी0पी0जे – 103 विवाह मेलापक एवं गोचर विचार

खण्ड – 1

इकाई -1 विवाह परिचय, प्रकार एवं महत्व

इकाई -2 विवाह में वर - कन्या का चुनाव एवं शुभ ग्रह योग

इकाई -3 अष्टकूट मिलान एवं उसकी उपयोगिता

इकाई -4 दक्षिण भारतीय मिलान पद्धति एवं ग्रह मेलापक

खण्ड - 2

इकाई – 1 कन्या एवं वर गुण दोष विचार

इकाई – 2 मांगलिक विचार एवं परिहार

इकाई – 3 लग्न चन्द्र एवं शुक्र से मांगलिक मिलान

इकाई – 4 विवाह मेलापक और स्वास्थ्य, धन, सन्तान, आयु विचार

इकाई – 5 दशा व गोचर से मेलापक

खण्ड - 3

इकाई – 1 गोचर विचार एवं चन्द्र से गोचर फल

इकाई – 2 मन्द गति, वक्री एवं मार्गी ग्रह गोचर विचार

इकाई – 3 शनि की साढे साती एवं फल विचार

इकाई – 4 शनि की ढैय्या एवं फल विचार

इकाई – 5 ढैय्या एवं साढे साती के उपाय

खण्ड - 4

इकाई – 1 सूर्यादि ग्रह संक्रान्ति से गोचर विचार

इकाई – 2 ग्रहों के शुभाशुभ स्थान एवं वेध विचार

इकाई – 3 दशा अनुसार गोचर विचार

इकाई - 4 सामान्य नक्षत्र गोचर फल

चतुर्थ पत्र - डी0पी0जे – 104 मुहूर्त्त विचार

खण्ड - 1

इकाई 1 मुहूर्त्त विचार एवं आवश्यकता

इकाई 2 सोलह संस्कारों का परिचय एवं भौतिक जीवन में योगदान

इकाई 3 गर्भाधान, पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन

इकाई 4 जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन एवं कर्णभेद मुहूर्त्त

खण्ड - 2

इकाई – 1 चूड़ाकर्म, विद्यारम्भ एवं उपनयन मुहूर्त्त

इकाई – 2 विवाह मुहूर्त्त

इकाई – 3 मुहूर्त्त में लग्न शुद्धि, गुरू – शुक्र एवं देवशयन विचार

खण्ड - 3

इकाई – 1 नींव खोदने एवं गृहारम्भ मुहूर्त्त

इकाई – 2 द्वार स्थापन मुहूर्त्त एवं गृहप्रवेशमुहूर्त्त

इकाई – 3 जीर्ण गृहप्रवेश एवं जीर्ण कूपारम्भ मुहूर्त्त

इकाई – 4 कूप तड़ाग एवं जलाशय मुहूर्त्त

खण्ड - 4

इकाई 1 दुकान खोलने एवं क्रय – विक्रय मुहूर्त्त

इकाई 2 देवालय मुहूर्त्त एवं मूर्ति प्रतिष्ठा

इकाई 3 तात्कालिक मुहूर्त्त एवं चौघड़िया

इकाई 4 होरा मुहूर्त्त, राहुकाल तथा यमघण्टक फल विचार